आरामिन्टा का रंगों का बक्सा

लेखनः कैरन एकरमैन

चित्रः बैट्सी लेविन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

आरामिन्टा का परिवार एक छप्पर वाली घोड़ागाड़ी से पश्चिम दिशा में उसे प्रदेश की ओर जा रहा था जो कैलिफोर्निया कहलाता है। रास्ते में वे पेन्सिलवेनिया में रहने वाले उसके चाचा के यहाँ रुके। वहाँ से निकलते समय उसके चाचा ने उसे बिदाई के तोहफे के रूप में एक रंगों का बक्सा दिया।

पर कुछ ही आगे जाने के बाद उनकी घोड़ागाड़ी का एक पहिया टूट गया, सारा समान बिखरा और आरामिन्टा का तोहफ़ा गुम हो गया - कम से कम आरामिन्टा ने तो यही सोचा।

रंगों का वह बक्सा पहले मिनियापोलिस के एक परिवार को मिला, तब मिसिसिपी के ज़ुआरी के सामान में ग़लती से शामिल हुआ। जिसके बाद वह मिसूरी के एक सेना अफ़सर की पत्नी के साथ मिसूरी नदी के सफ़र पर चला - यह बक्से के साथ घटी घटनाओं की शुरुआत भर थी।

यह मज़ेदार, हल्की-फुल्की कथा आरामिन्टा और उसके रंगों के बक्से की अमरीका के एक से दूसरे छोर के सफ़र के बारे में है। किताब के खुशनुमा चित्र उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में अमरीका के पश्चिम दिशा में विस्तार की जीवन्त झलक देते हैं।

आरामिन्टा का रंगों का बक्सा

लेखनः कैरन एकरमैन

चित्रः बैट्सी लेविन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

आरामिन्टा का रंगों का बक्सा

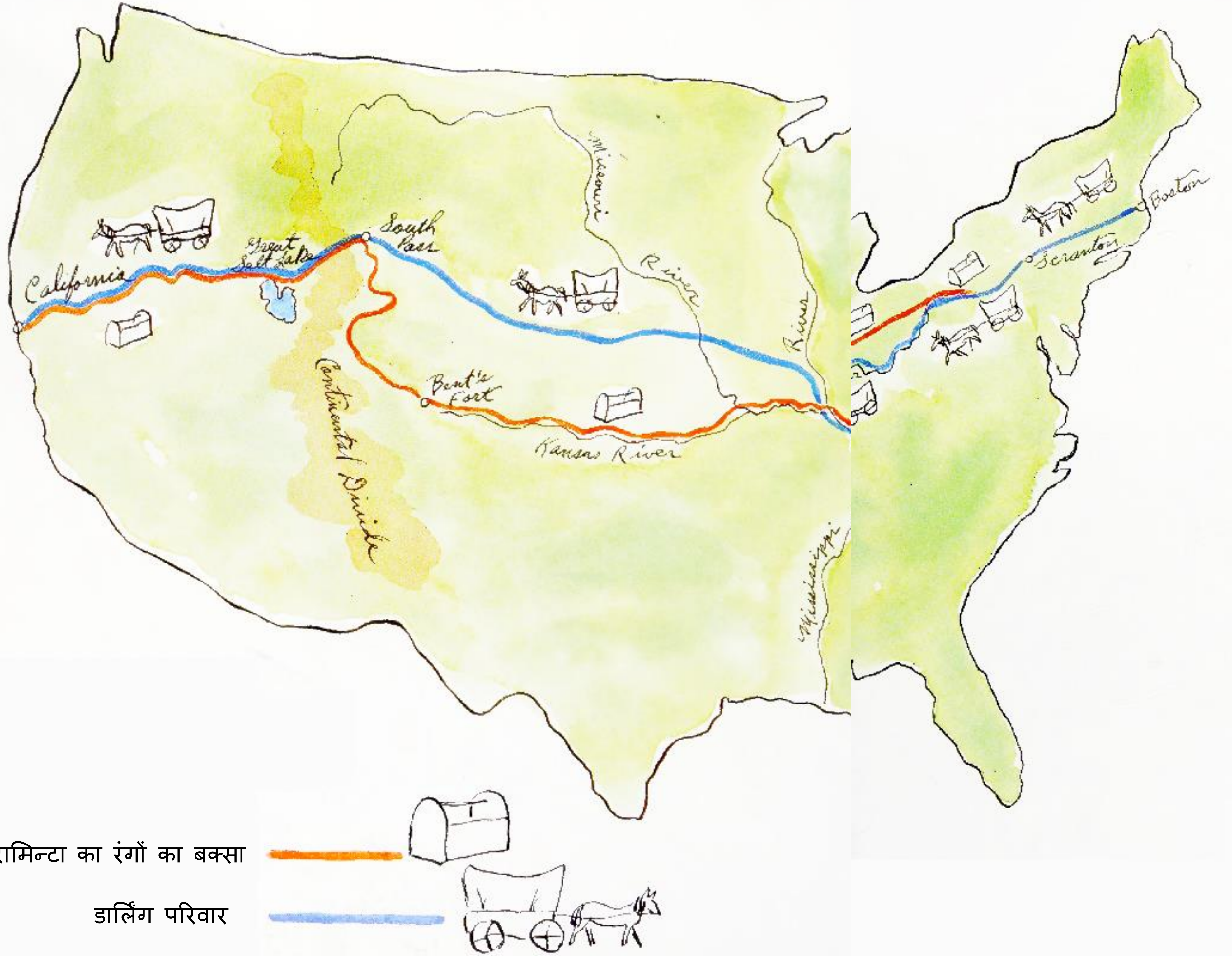

आरामिन्टा का रंगों का बक्सा

डार्लिंग परिवार

जुलैट के लिए,

- के.ए.

ननी सौण्डरलैण्ड, विलर्ड डोमिनीक, बैटी हैरिस और जॉन फिलसिंगर को, आभार और सुखद स्मृतियों के साथ,

- बी.एल.

1847 में डॉ. मार्कस डार्लिंग, अपनी पत्नी एमीलिया ओर बेटी आरामिन्टा के साथ बॉस्टन, मैसाच्युसैटस् में रहते थे।

डॉ. डार्लिंग बॉस्टन के सम्मानित चिकित्सक थे। वे लम्बे घंटों काम करते और कई बार तो अपनी बग्घी से मीलों का सफ़र तय कर किसी बच्चे को पैदा करने, किसीकी टूटी हड्डी जोड़ने, या जिसे साँप ने काटा हो उसका इलाज करने में मदद करते थे। वे अच्छे चिकित्सक थे और एमीलिया और आरामिन्टा, दोनों को उन पर फक्र था।

डॉ. डार्लिंग बॉस्टन में इतने मशहूर हो गए कि उन्हें सुदूर पश्चिम में नए बस रहे कैलिफोर्निया के पहले चिकित्सक के पद के लिए आमंत्रित किया गया। चर्चा यह थी कि कैलिफोर्निया जल्द ही एक राज्य बनने वाला है। जिसका मतलब था कि लोग वहाँ बसने के लिए ज़मीन खरीदने वाले थे। और जहाँ लोग होते हैं, वहाँ एक चिकित्सक की दरकार भी होती है।

डार्लिंग परिवार ने अपना वह सारा सामान बांधा, जो एक सामान ढो सकने वाले घोड़ों की एक जोड़ी वाली घोड़ागाड़ी में समा सके। एमीलिया का सुन्दर सोफा, डॉक्टर की जाँच टेबल, आरामिन्टा का खिलौनों का पिटारा, गाड़ी के पिछले हिस्से से कुछ बाहर निकले हुए थे और खाना पकाने के बर्तन-भांडे गाड़ी के बगल से लटके उन जगहों से खनक रहे थे जहाँ एमीलिया और आरामिन्टा ने उन्हें सावधानी से बांधा था।

वे स्क्रैन्टन, पेन्सिलवेनिया के रास्ते बढ़े, जहाँ डॉक्टर के एकलौते भाई रहते थे। वे पादरी थे। इरादा यह था कि भाई के परिवार से मिलने के साथ वहाँ घोड़ों को सुस्ताने का मौका भी मिल सकेगा। डॉक्टर और उनके भाई तकरीबन दस सालों से मिले ही नहीं थे। सो जब डार्लिंग परिवार स्क्रैन्टन पहुँचा तो गले लगने, हाथ मिलाने ओर चुम्मियाँ देने का लम्बा सिलसिलस चला।

आरामिन्टा के चाचा रेवरैण्ड जेकब डार्लिंग ने आरामिन्टा को अब तक देखा तक नहीं था। डॉक्टर का परिवार स्क्रैन्टन से निकलता, उसके पहले चाचा जेकब ने आरामिन्टा को कैलिफोर्निया ले जाने के लिए एक लकड़ी से बना रंगों का एक बक्सा दिया।

"मेरी प्यारी भतीजी के लिए," उन्होंने फुसफुसा कर आरामिन्टा से कहा, और उसका गाल थपथपाया।

डार्लिंग परिवार ने हाथ हिला कर विदा ली, और आरामिन्टा रंगों का बक्सा हाथ में थामे गाड़ी के पिछले हिस्से में बैठी।

रंगों का वह बक्सा बेहद खूबसूरत था, आरामिन्टा ने ऐसा बक्सा पहले कभी देखा ही न था। वह तकरीबन दो फुट लम्बा था। उसमें ऊपर की ओर रंगों की छोटी-छोटी शीशियों की दो कतारें थीं। दोनों सिरों पर गहरे छेद थे जिनमें कलमें और ब्रश रखे हुए थे। और बीच में चित्र आँकने वाले काग़ज़ों का एक पुलिन्दा रेशमी रिबन से बंधा रखा हुआ था। आरामिन्टा ने रंग की हरेक शीशी, हरेक कलम और ब्रश पर प्यार से हाथ फिराया। वह चित्र आँकने को बेसब्र थी।

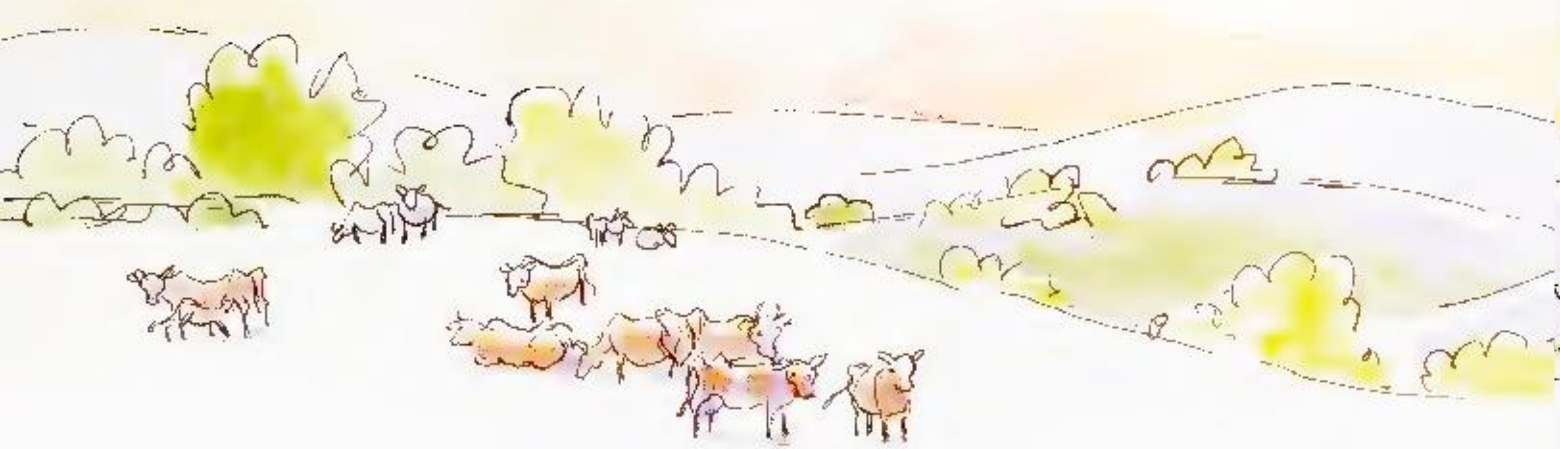

वे पेन्सिलवेनिया पार करते ओहायो के रास्ते बढ़े, जहाँ से उन्हें जहाज़ से ओहायो नदी पार कर इलिनॉइस की ओर जाना था और तब विशाल मिसिसिपी नदी को पार करना था।

पेन्सिलवेनिया के खेतों वाले इलाके का सफ़र बेहद गर्म और धूल-धक्कड़ भरा था। आरामिन्टा को गाड़ी के पिछले हिस्से में बैठ चित्र बनाने में मुश्किल आ रही थी। धूल का गुबार उठता और चित्र के गीले रंगों पर, ब्रश के बालों पर धूल के कण चिपक जाते। बीच-बीच में गाड़ी का पहिया किसी बड़े पत्थर पर चढ़ता या गड्ढे में धँसता तो गाड़ी एक ओर झूल जाती। उसके ब्रश धोने वाले प्याले का पानी छलकता और आरामिन्टा का फ्रॉक और शमीज़ भीग जाते।

जब उनकी घोड़ागाड़ी का एक पहिया अचानक ही पास की पहाड़ी से लुढ़की एक चट्टान पर चढ़ा, अन्दर का सारा सामान हवा में उछला और बाहर बिखर गया। एमीलिया का सोफा, औंधा हो सड़क पर जा गिरा। आरामिन्टा के रंगों की शीशियाँ इधर-उधर लुढ़कीं, और डॉक्टर की जाँच मेज़ उछलने के बाद सड़क पर ऐसे गिरी मानो डॉक्टर के अगले मरीज़ का इन्तज़ार कर रही हो।

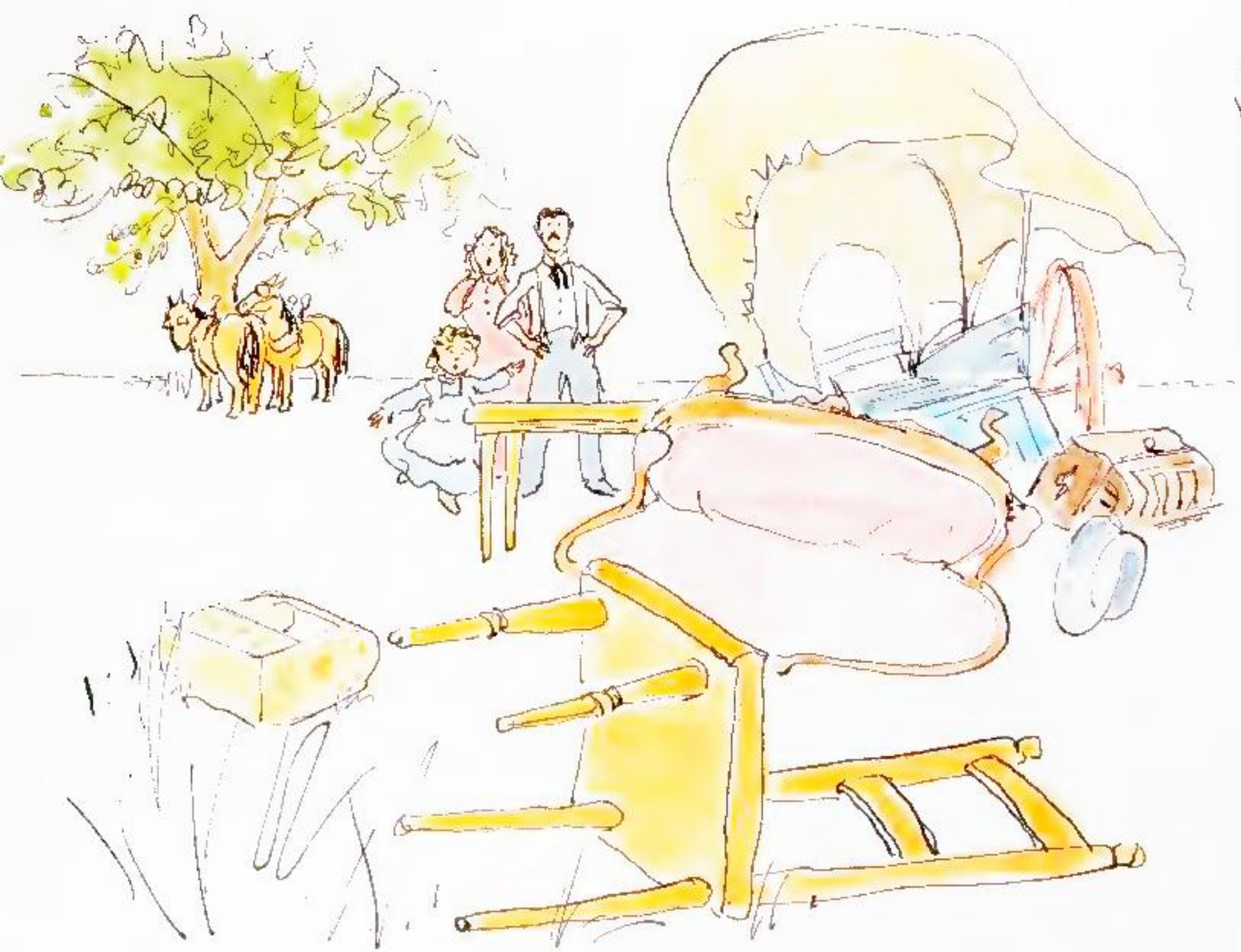

डॉक्टर डार्लिंग खेतों को पार कर एक किसान के घर पहुँचे, यह पूछने कि क्या कोई उनके टूटे पहिए को बदलने में मदद कर सकता है। वह खेत फ्रीडलैंडर नामक मेनोनाइट परिवार का था। मिस्टर फ्रीडलैंडर मदद करने को तैयार हुए।

पर जब गाड़ी को सीधा कर उसका पहिया बदल दिया गया, आरामिन्टा के रंगों के बक्से पर, जो बाहर जा गिरा था, किसीकी नज़र ही नहीं पड़ी। आरामिन्टा को भी उसका ध्यान तब तक नहीं आया जब तक वे बहुत आगे न बढ़ गए।

आरामिन्टा का खूबसूरत रंगों का बक्सा गुम हो चुका था।

एक दोपहर डैनियल फ्रीडलैंडर फूस के पुलिन्दे बांधने में अपने पिता की मदद कर रहा था कि उसका पैर किसी चीज़ से टकराया। यह तो रंगों का सुन्दर बक्सा था, हालांकि उसमें अब रंगों की सिर्फ चार छोटी शीशियाँ, दो कलमें, एक ही ब्रश और कागज़ों का एक पुलिन्दा था।

जब डैनियल ने अपने पिता, मिस्टर फ्रीडलैंडर को बताया, वे समझ गए कि यह उसी घोड़ागाड़ी से गिरा होगा जिसका पहिया सप्ताह भर पहले टूटा था।

“वे लोग तो इसे लेने लौटेंगे नहीं,” उन्होंने अपने बेटे से कहा। “लौटते तो ओहायो नदी वाला उनका जहाज़ छूट जाता।”

रंगों का बक्सा अब फ्रीडलैंडर परिवार के पास था।

वह बक्सा फ्रीडलैंडर परिवार के बड़ा काम आया। मिसेज़ फ्रीडलैंडर ने उसके रंगों से रसोई घर की दीवारों पर दिल, फूल और छल्ले आँके। उन्होंने नीले रंग की पूरी शीशी और लाल रंग की आधी शीशी इस्तमाल कर डाली।

डैनियल ने कागज़ों पर अपनी ईनामी गायों के चित्र आँके।

मिस्टर फ्रीडलैंडर ने अपने बढ़ईगिरी के औज़ार रखने के लिए लकड़ी के बक्से का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

एक दिन मिस्टर फ्रीडलैंडर, एक नए जोड़े के लिए बनाए जा रहे खलिहान में मदद करने पहुँचे। पूरी काउंटी के किसान खलिहान बनाने में मदद करने वहाँ इकट्ठा थे, जहाँ वे शादी के बाद रहने वाले थे। मिस्टर फ्रीडलैंडर अपने औज़ारों का बक्सा साथ ले गए थे।

दूल्हे का बैस्ट मैन (शादी के वक्त का खास साथी) भी इलिनॉइस से एक कोच (घोड़गाड़ी) से आया और मदद करने में जुट गया। उस जगह से एक सवारी उसी कोच में बैठी, जो अब मिसिसिपी नदी की ओर जा रही था।

जिस दौरान खलिहान की दीवारें बनाई जा रही थीं, उसी दौरान खाली लकड़ी का बक्सा कोच में सवारी के सामान के साथ गलती से चढ़ा दिया गया। जब तक मिस्टर फ्रीडलैंडर ने देखा कि उनका बक्सा नदारद है, कोच कब का इलिनॉइस के रास्ते बढ़ चुका था।

मिस्टर फ्रीडलैंडर का औज़ारों का बक्सा गुम हो चुका था।

कोचवान अपनी सवारी को उतारने, नहाने-धाने और आगे सफ़र करने से पहले भर-पेट खाने के वास्ते स्प्रिंगफील्ड में रुका। लकड़ी का बक्सा कोच से सवारी के सामान के साथ नीचे उतार दिया गया।

सवारी का नाम डूलिटिल था। वह नदी पार करने वाले जहाज़ों में चढ़ता था और दूसरी सवारियों के साथ जुआ खेलता था। वह हैनिबल, मिसूरी के लिए एक दूसरी कोच में बैठा, जहाँ उतर वह ब्लू-बैल नाम के जहाज़ में चढ़ा। उसने यह ग़ौर ही नहीं किया कि उसके सामान के साथ एक लकड़ी का बक्सा भी शामिल हो चुका है।

सो रंगों का बक्सा जहाज़ में पड़ा मिसिसिपी नदी में दक्षिण की ओर बढ़ चला।

इस बार किस्मत ने डूलिटिल का साथ नहीं दिया, सप्ताह भर में ही वह अपनी जमा-पूँजी गंवा बैठा। सो जहाँ मिसिसिपी नदी और मिसूरी नदी का संगम है, वहाँ डूलिटिल जहाज़ से उतर गया। उसके सन्दूकों के साथ रंगों का वह बक्सा भी उतार कर घाट पर रख दिया गया। यह सोच कि लकड़ी का बक्सा किसी और का है, डूलिटिल अपना सामान ले गया और बक्सा वहीं छोड़ दिया।

आरामिन्टा का रंगों का बक्सा दो सप्ताह तक वहीं घाट पर धरा रहा, किसीने उस पर दावा ही नहीं किया।

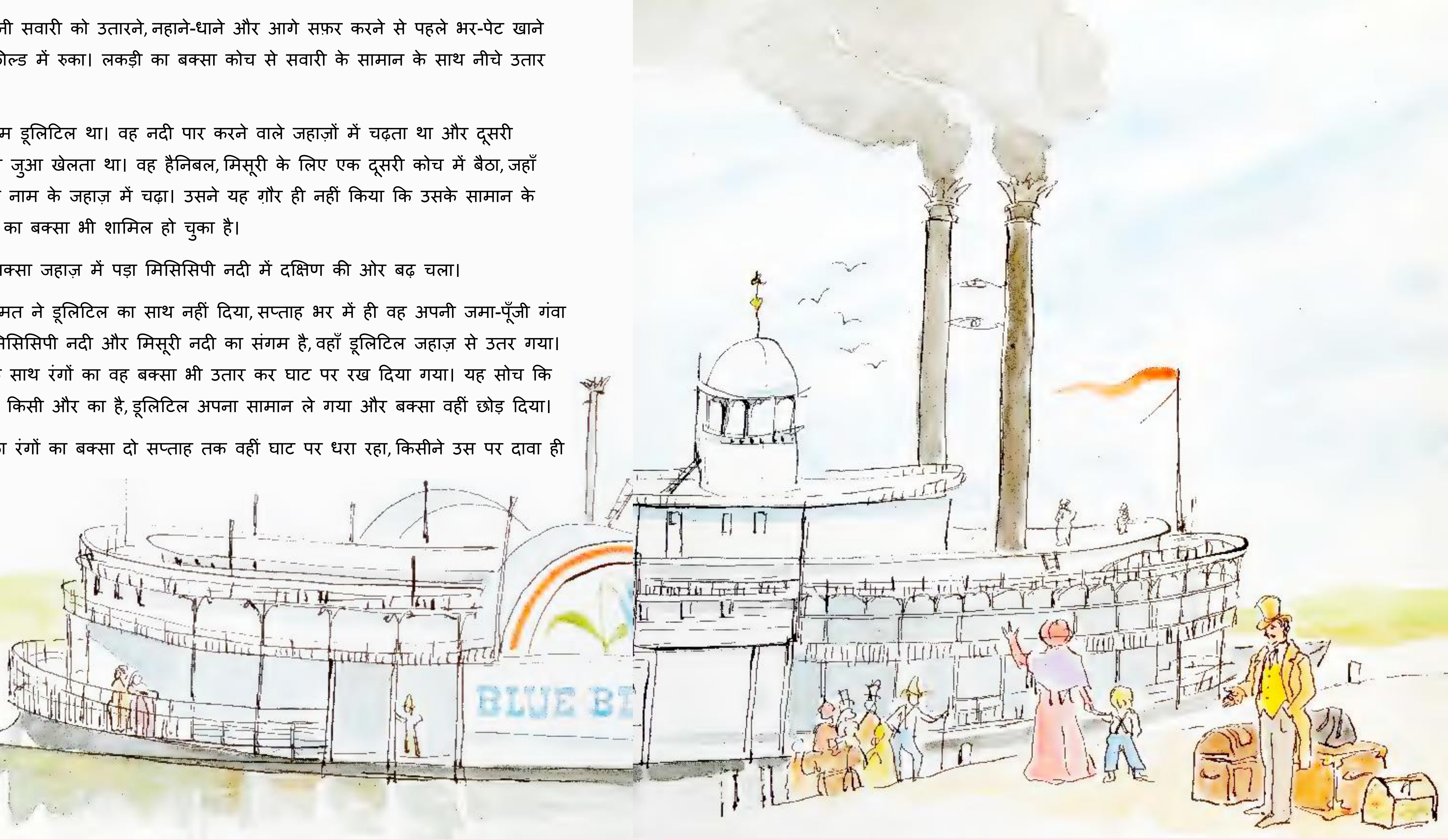

एक नवविवाहित युवती अपने पति से मिलने पश्चिम की ओर कोलोराडो तक सफ़र कर रही थी। वह उसी घाट पर अपने जहाज़ का इन्तज़ार करने आई ताकि मिसूरी नदी पार कर कैनसास नदी तक जा सके और तब बेन्टस् फोर्ट पहुँच सके। उसने पास ही रखे रंगों के बक्से को देखा।

युवती का पति कप्तान बेमांट बेन्टस् फोर्ट में मैक्सिको युद्ध के लिए अपनी टुकड़ी को प्रशिक्षित कर रहा था। उसे उम्मीद थी कि युद्ध जल्द ही खत्म हो जाएगा, सो उसने अपनी पत्नी को बुलवा लिया था। उसे इल्म न था कि उसकी पत्नी गर्भवती है।

युवा मिसेज़ बेमांट ने बक्से को देख यह सोचा कि वह उसके होने वाले शिशु को उठा ले जाने के लिए एक उम्दा टोकरा बन सकता है। उसने पूछताछ की, पता चला कि बक्से का कोई मालिक ही नहीं है। सो उसने अपने सामान के साथ बक्सा भी जहाज़ पर चढ़वा लिया।

सो रंगों का बक्सा अब मिसूरी नदी पर बढ़ चला।

मिसूरी से एक और जहाज़ पकड़ मिसेज बेमांट ने कैनसास नदी पार की। तब वहाँ से एक कोच पकड़ वह बेन्टस् फोर्ट पहुँची, जहाँ उसका पति उसे मिलने वाला था।

जब वह पहुँची, बेन्टस् फोर्ट में गहमा-गहमी थी। सैनिक इधर-उधर भागदौड़ कर, घोड़ों पर अपना सामान लाद दक्षिण में न्यू मैक्सिको जाने की तैयारी कर रहे थे, जहाँ युद्ध चल रहा था। कप्तान बेमांट ने अपनी पत्नी का सामान हड़बड़ी में उतारा, उससे माफ़ी मांगते कहा कि उसे उसे लाम पर निकलना है। तब अपने घोड़े पर सवार हो सैनिकों के साथ बेन्टस् फोर्ट के द्वार से निकल गया।

मिसेज़ बेमांट को नई जगह पर अकेले सारा सामान व्यवस्थित करना पड़ा। जब तक उसने ग़ौर किया कि लकड़ी का वह सुन्दर बक्सा उसके सन्दूकों के साथ नहीं है, बहुत देर हो चुकी थी। कप्तान उसे कोच में ही छोड़ आए थे, उन्हें पता ही नहीं था कि वह उसकी पत्नी का था।

मिसेज़ बेमांट के भावी शिशु का टोकरा गुम हो चुका था।

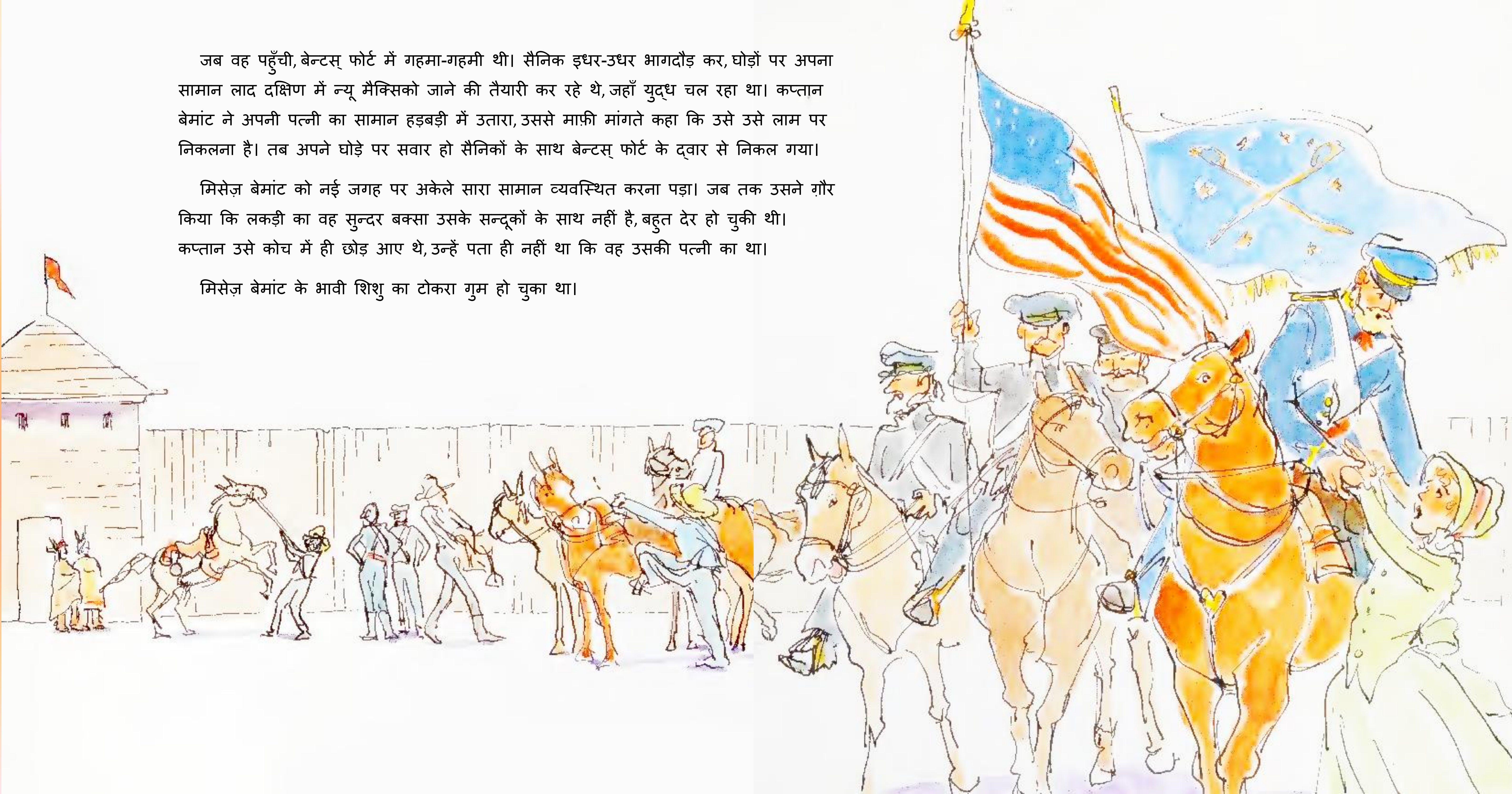

इधर वह कोच बेन्टस् फोर्ट से कॉन्टिनैन्टल डिवाइड (पर्वतमाला) के दक्षिणी दर्रे तक गई। उसमें बैठी सवारियाँ एक मॉरमन परिवार की थीं, जिन्हें दक्षिणी दर्रे के पास उतारा गया। वे आगे का पहाड़ी सफ़र घोड़ों से तय करने वाले थे। वे पश्चिम की ओर एक नए समुदाय में बसने जा रहे थे जो विशाल सॉल्ट लेक के पास ही पूर्व से आए मॉरमन लोगों ने बनाया था।

परिवार का नाम कैलाघर था। उनके सबसे छोटे बेटे का नाम था एलाइज़ा। एलाइज़ा ने बक्से को परिवार के सामान पर धरा देखा।

“यह किसका है पापा?” उसने अपने पिता से पूछा। पिता ने कोचवान को आवाज़ लगाई कि वह बक्सा वापस ले ले। पर कोचवान ने सुना ही नहीं।

बक्से ने एलाइज़ा के घोड़े पर पहाड़ पार किए।

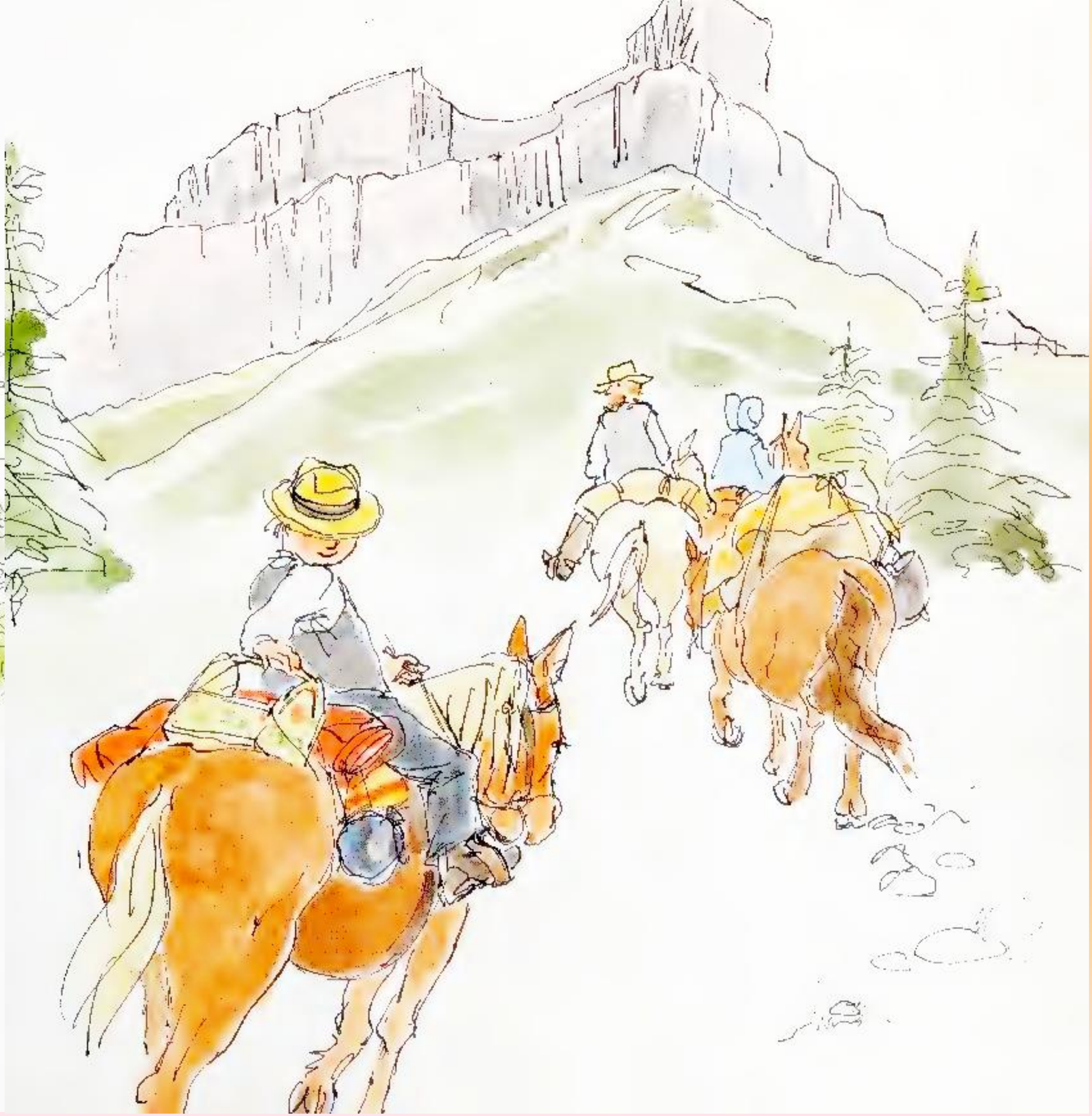

जब कैलाघर परिवार सॉल्ट लेक पहुँचा, पूरा समुदाय उनके स्वागत में आया हुआ था। स्वागत को आए परिवार यह सफ़र पहले खुद भी तय कर चुके थे। वे जानते थे कि पूर्व में सब कुछ छोड़ नया जीवन शुरू करना कितना मुश्किल होता है। कैलाघर परिवार को उनका नया पड़ौसी अपनी घोड़ागाड़ी में बैठा विशाल सॉल्ट लेक दिखाने ले गया, जो नई बस्ती का केन्द्र था।

अन्य परिवारों ने कैलाघर परिवार के स्वागत में एक समूह भोज का इन्तज़ाम किया था। लेक के किनारे मेज़ें लगाई गई थीं। सभी मॉरमन परिवार पिकनिक में शामिल हुए। हरेक परिवार ने नए आए कैलाघर परिवार के स्वागत में दुआ की।

बच्चे एलाइज़ा के गिर्द इकट्ठा हो पूछने लगे कि वह कहाँ से आया है, वह किस स्कूल में पढ़ता था।

इधर एक बुजुर्ग जो सोने की तलाश में निकला था, अपने खच्चर से ओरेगॉन पगडंडी के रास्ते सॉल्ट लेक पहुँचा। कैलिफोर्निया में गोल्ड रश (सोने के खोज की होड़) शुरू हो चुकी थी। वह बुजुर्ग उन पहले लोगों में शामिल होना चाहता था जो वहाँ की ज़मीन पर अपना दावा ठोकें। वह उस दोराहे पर पहुँचा जहाँ उसे सॉल्ट लेक के किनारे लोग दिखे। उसे आगे के सफ़र के लिए ताज़ा पानी और खाने का सामान चाहिए था।

वह अपने खच्चर को लेक के पास लाया। उसने पानी और खाने को थोड़ा-सा सूखा मांस या फलियाँ मांगी। पर मॉरमन परिवारों ने बखुशी उसे थाली भर गरम खाना खिलाया। बुज़ुर्ग ने पेट भर खाया और अपने खच्चर को आराम करने का समय दिया।

सोने के उस खोजी को जो उसने मांगा उससे कहीं ज़्यादा मिला। उसके खच्चर पर अब खाने-पीने के सामान की पेटियाँ बंधी थीं। हर परिवार ने उसे सफ़र के लिए कुछ न कुछ दिया था।

पर कैलाघर परिवार तो अपना सब कुछ पूर्व में छोड़ आया था। सो एलाइज़ा ने खोजी को लकड़ी का बक्सा थमा दिया।

बक्सा ठीक उतना बड़ा था जिसमें कैलिफोर्निया के सोने की डलियाँ उठा ले जाई जा सकें। सो खोजी ने शुक्रिया अदा की और बक्से को साथ ले लिया।

बुज़ुर्गवार के खच्चर की पीठ से लटका बक्सा यों कैलिफोर्निया पहुँचा।

खोजी ने सोना मिलने के पहले महीनों खुदाई की। जब उसे सोना मिला वह उसकी डलियाँ बक्से में डाल शहर के दफ्तर की ओर चला, ताकि उस ज़मीन पर अपना दावा दर्ज करवा ले।

जब वह शहर के छोर पर घनी खरपतवार के बीच से गुज़र रहा था, उसे अपने टखने में तेज़ दर्द महसूस हुआ। उसे एक सांप ने डस लिया था।

जितनी तेज़ी से हो सका खोजी लंगडाता हुआ आगे बढ़ा और स्थानीय डॉक्टर के दफ्तर के सामने पहुँच बेहोश हो गया।

डॉक्टर यह देखा बाहर दौड़े, उसे उठा अन्दर लाए। उन्होंने खोजी को सांप काटने की दवा दी। उसके घाव को साफ़ कर मरहम-पट्टी की।

जब बूढ़े खोजी को चेत हुआ उसने डॉक्टर से कहा कि वह उनकी मदद के लिए सोना दे सकता है। डॉक्टर की छोटी बेटी को उसका बक्सा लाने बाहर भेजा गया, जहाँ खोजी के बेहोश होने पर वह गिर पड़ा था।

हालांकि खोजी बाद में अपने दावे के कारण बहुत अमीर हो गया, जिस डॉक्टर ने उसकी जान बचाई थी, उसने भुगतान के रूप में उससे सोना नहीं, सिर्फ उसकी लकड़ी का बक्सा मांगा था।

डॉ. डार्लिंग उस बक्से को अपनी बिटिया के लिए रंगों का बक्सा बनाना चाहते थे, जो कैलिफोर्निया के रास्ते में गुम हो गया था।

कैरन एकरमैन सिनसिनाटी में रहती हैं, जहाँ वे बच्चों के लिए कहानियाँ और वयस्कों के लिए कविताएं और नाटक लिखती हैं। वे *सौंग एण्ड डान्स मैन* की लेखिका हैं, जिसे स्टीवन गैमल ने चित्रित किया, जिन्हें 1989 में कैल्डकॉट मेडल से नवाज़ा गया था।

बैट्सी राइली लेविन क्लीयरफील्ड, पेन्सिलवेनिया में पली-बढ़ीं। उन्होंने प्रैट इन्सिटिट्यूट, ब्रुकलिन, न्यू यॉर्क से ललित कला में स्नातक किया। वे अपने पति के साथ ब्रुकलिन में रहती हैं। उनके पति टेड भी चित्रकार और लेखक हैं। वे दोनों एक सौ साल पुराने ब्राउनस्टोन से बने मकान में अपनी दो बिल्लियों, डंडी व बोन्स् के साथ रहते हैं।